Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

Original Article

भारत छोड़ों आंदोलन में बिहार की महिलाओं भूमिका

डॉ.डौली कुमारी
सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) ल. ना. मि. वि., दरभंगा
Email- Daulikri2020@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171025
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 10
Pp. 111-115
October. 2025
Submitted: 18 Sept. 2025
Revised: 28 Sept. 2025
Accepted: 13 Oct. 2025
Published: 31 Oct. 2025

शोध सारांश :

अंग्रेजो "भारत छोड़ो" आंदोलन महात्मा गाँधी का शंखनाद था। उन्होंने इसे अपने जीवन का अंतिम संघर्ष मानकर करो या मरो का नारा दिया। भारत छोड़ों आंदोलन, जिसे अगस्त क्रांति के नाम से भी जाना जाता है, 1942 में महात्मा गाँधी क नेतृत्व में भारतीय जनता द्वारा ब्रिटिश शासन के खिलाफ चलाया गया। यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक और ग्रहन चरण था, जिसने देश भर में जन–जागरूकता, प्रतिरोध और राजनीतिक सक्रिता की लहर पैदा की। इस संघर्ष में या तो हम विजय होगे अथवा मिट जाएंगे उनके इस घोषण का कांग्रेस कार्यकारिणी से समर्थन किया पूरे देश में आजादी की जंग शुरू हो गई या आंदोलन कितना सफल हुआ और इस की कमजोरियों का विश्लषण अलग बात है मगर यह सच है कि जरूरत 1942 के बाद अगस्त 1947 तक कोई आक्रमण जन आंदोलन नहीं हुआ। गाँधी जी 1917 में भारत लौटकर बिहार के चंपारण में नील मजदूर के समर्थन में अंग्रेजों का विरोध का स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। बिहार स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक केन्द्रों में से एक रहा है। यहाँ के शहरी केन्द्र पटना, गया और भागलपुर आंदोलन के मुख्य केन्द्र बने, वही ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाओं और पुरूषों ने मिलकर ब्रिटिश नीतियों का विरोध किया। बिहार की महिलाओं ने इस आंदोलन में अपनी भूमिका निभाते हुए साहस नेतृत्व और त्याग की मिसाल प्रस्तुत की महिलाओं योगदान केवल समर्थन करने तक सीमित नहीं, बल्कि महिलाओं के सक्रिय रूप से आंदोलन के नेतृत्व संगठन और रणनीति में भी शामिल रही।[1] महिलाओं ने आंदोलन में विभिन्न रूपों में भूमिका निभाई थी। भारत छोड़ों आंदोलन जिसे अगस्त क्रांति के नाम से भी जाना जाता है, 1942 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय जनता द्वारा ब्रिटिश शासन के खिलाफ चलाया गया। यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक और गहन चरण था, जिसने देशभर में जन–जागरूकता, प्रतिरोध और राजनीतिक सक्रियकता की लहर पैसा की। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ असहयोग, सत्याग्रह और नागरिक अवज्ञा इस आंदोलन की मुख्य रणनीतियाँ थी।[2] यह केवल राजनीतिक संघर्ष तक सीमित नहीं था, बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी इसका व्यापक प्रभाव दिखाई दिया। स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक केंद्रों में से एक रहा है। यहाँ के शहरी केंद्र जैसे पटना, गया और भागलपुर आंदोलन के मुख्य केंद्र बने, वही ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाओं और पुरूषों ने मिलकर ब्रिटिश नीतियों का विरोध किया। बिहार की महिलाओं ने इस आंदोलन में अपनी भूमिका निभाते हुए साहस, नेतृत्व और त्याग की मिसाल प्रस्तुत की। उनका योगदान केवल समर्थन करने तक सीमित रहीं रहा, बल्कि वे सक्रिय रूप से आंदोलन के नेतृत्व, संगठन और रणनीति में शामिल रही। महिलाओं ने आंदोलन में विभिन्न रूपों में भागीदारी की। शहरी क्षेत्रों में वे सरकारी कार्यालयों, चाय और रेल स्टेशनों का घेराव करती थीं, सत्याग्रह अज़ैर हड़ताल में भाग लेती थी, और आंदोलन की सूचनाओं का आदान–प्रदान करती थी। ग्रामीण क्षेत्रों में उन्होंने गांवों मे जन–जागरूकता फैलाने, सत्याग्रह आयोजित करने और स्थानीय नेतृत्व का मार्गदर्शन करने में योगदान दिया।[3]

सांस्कृतिक और सामाजिक माध्यमों का उपयोग करके महिलाओं ने आंदोलन की भावना को जन–जन तक पहुँचाया। नारे, लोकगीत, नाटक और सभाओं के माध्यम से जनता को ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित किया गया। इस प्रकार महिलाओं ने न केवल प्रत्यक्ष संघर्ष में भाग लिया, बल्कि आंदोलन की विचाराधारा और संदेश को व्यापक स्तर तक पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। महिलाओं का साहस और त्याग उनके जेल संघर्ष और बलिदान में स्पष्ट दिखाई देता है। कई महिला क्रांतिकारिणियाँ गिरफ्तार हुई, जेल में कठिनाइयाँ सहन की और आंदोलन की भावना को जीवित रखने में अग्रणी रही। उनका यह बलिदान पुरूष स्वतंत्रता सेनानियों के लिए भी प्रेरणास्त्रोत बना। इस शोध लेख का उद्देश्य बिहार की महिलाओं के योगदान को ऐतिहासिक दृष्टि से विश्लेषित करना है। इनमें महिलाओं की प्रमुख क्रांतिकारिणियों की भूमिकाओं, ग्रामीण और शहरी भागीदारी, जेल संघर्ष, सामाजिक–सांस्कृतिक योगदान, नेतृत्व और रणनीति का अध्ययन किया गया है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.डौली कुमारी, सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) ल. ना. मि. वि., दरभंगा

How to cite this article:
कुमारी, . डौली . (2025). भारत छोड़ों आंदोलन में बिहार की महिलाओं भूमिका. Journal of Research and Development, 17(10), 111–115. https://doi.org/10.5281/zenodo.17637036

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17637036
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

बिहार की महिलाओं ने न केवल आंदोलन को मजबूती दी, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अपनी अमूल्य छाप भी छोड़ी। उनको योगदान यह स्पष्ट करता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों के संघर्ष के समान महत्वपूर्ण थी और उनके साहस नेतृत्व और त्याग की मिसाल आज भी प्रेरणादायक है।[4]

शब्द–कुंजी :– *भारत छोड़ों आंदोलन, अगस्त क्रांति, बिहार की महिला, महात्मा गांधी, संतोषी देवी, रोहिणी देवी, लक्ष्मी देवी, शांति देवी।*

भूमिका

बिहार में आंदोलन ऐतिहासिक घटना :–

भारत छोड़ो आंदोलन 1942 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाया गया, और इसका प्रभाव पूरे भारत में महसूस किया गया। बिहार, स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक रहा है। यहाँ आंदोलन की शुरूआत शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में हुई। शहरी क्षेत्रों जैसे पटना, गया, भागलपुर और मथुरा में आंदोलन ने विशेष रूप से महिलओं की सक्रिय भागीदारी देखी। इन शहरों में महिलाएँ न केवल सड़को पर उतरकर ब्रिटिश कार्यालयों का घेराव करती थी, बल्कि हड़तालों धरनों और विरोध प्रदर्शनों के माध्यम से प्रशासनिक कार्यों को बाधित करने में भी सक्रिय थे। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जन–जागरूकता अभियान चलाया लोगों को सत्याग्रह और युवा पीढ़ी को आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी और भी चुनौतीपूर्ण थी। वहाँ के सामाजिक और पांरपरिक बंधनों के कारण महिलाओं की सार्वजनिक सक्रियता सीमित थी, फिर भी उन्होंने गाँव–गाँव जाकर आंदोलन की सूचनाओं का प्रसार किया। ग्रामीण महिलाओं ने सत्याग्रह में भाग लिया, विरोध प्रदर्शन आयोजित किए और स्थानीय नेताओं ने साथ मिलकर आंदोलन को संगठित किया। कई गाँवों में महिलाओं ने अपने पुरूष साथियों के साथ मिलकर प्रदर्शन किया, किसानों और मजदूरो को आंदोलन में शामिल किया, और स्थानीय ब्रिटिश नीतियों के विरोध में साहसिक कदम उठाए। बिहार में भारत छोड़ों आंदोलन ने महिलाओं को पांरपरिक सामाजिक और घरेलू सीमाओं से बाहर निकलने का अवसर प्रदान किया। यह आंदोलन महिलाओं के रानजीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक नेतृत्व की शुरूआत का प्रतीक बना। महिलाओं ने केवल पुरूष नेताओं का समर्थन नहीं किया, बल्कि उन्होंने आंदोलन की रणनीति, संगठन और संदेश के प्रचार–प्रसार में भी निर्णायक भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व और सक्रिय भागीदारी ने यह साबित किया कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों के समान ही महत्वपूर्ण और प्रभावशाली थी। इसके अलावा, बिहार की महिलाओं ने आंदोलन को सांस्कृतिक और सामाजिक माध्यमों के द्वारा भी मजबूत किया। उन्होंने गीत, नारे, नाटक और स्थानीय सभाओं के माध्यम से जनता को आंदोलनों में शामिल किया। यह सामाजिक जागरूकता आंदोलन के संदेश को ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। इस प्रकार बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन केवल राजनीतिक विरोध तक सीमित नहीं रहा, बलिक यह महिलाओं की सामाजिक सक्रियता, नेतृत्व क्षमता और साहस का ऐतिहासिक उदाहरण बन गया। बिहार की महिलाओं की इस सक्रिय भागीदारी ने न केवल आंदोलन की सफलता में योगदान दिया, बल्कि भारतीय समाज मे महिलाओं की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति को भी सुदृढ़ किया। उनके योगदान ने यह स्पष्ट कर दिया कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं को साहस, त्याग और नेतृत्व पुरूषों के संघर्ष के समा नही महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक था।[5]

बिहार की प्रमुख क्रांतिकारिणियाँ और उनका योगदान

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने साहस, नेतृत्व और त्याग की अद्वितीय मिसाल प्रस्तुत की। उन्होंने न केवल पुरूष ने नेतृत्व का समर्थन किया, बल्कि आंदोलन के संगठन, रणनीति और प्रचार में भी सक्रिय भाग लिया।

1. लक्ष्मी देवी :–

लक्ष्मी देवी बिहार की उन महिला क्रांतिकारिणियों में से एक थी, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में आंदोलन का नेतृत्व किया। वे यह दिखाने वाली महिलाओं में शामिल थी कि स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी केवल शहरों तक सीमित नहीं थी बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ भी सक्रिय और निर्णायक भूमिका निभा सकती है। लक्ष्मी देवी ने गाँव–गाँव जाकर महिलाओं को संगठित किया। उन्होंने स्थानीय महिलाओं को सत्याग्रह, विरोध प्रदर्शन और हड़तालों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उनके उद्देश्य केवल विरोध प्रदर्शन करना नहीं था, बल्कि ग्रामीण महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता नेतृत्व क्षमता और सामाजिक सक्रियता विकसित करना भी था। उनके प्रयासों से ग्रामीण महिलाओं ने न केवल आंदोलन में भाग लिया, बल्कि अपने परिवार और समुदाय में भी स्वतंत्रता संग्राम की भावना फैलाई।

लक्ष्मी देवी ने जन–जागरूकता अभियान चलाकर स्थानीय जनता को ब्रिटिश नीतियों और अत्याचारों के खिलाफ सजग किया। उन्होंने महिलाओं और युवाओं को आंदोलन के उद्देश्यों और रणनीतियों से परिचित कराया और उन्हें संगठनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस तरह उन्होंने ग्रामीण बिहार में आंदोलन की सामाजिक और राजनीतिक नींव मजबूत की। इस प्रमुख महिला क्रांतिकारिणियों संतोषी देवी, रोहिणी देवी और लक्ष्मी देवी के अलावा कई अनाम महिला योद्धाओं ने भी अपने गाँवों और शहरों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने सत्याग्रह में भाग लिया, चुप्पी का विरोध किया, ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ प्रतिरोध किया और स्थानीय जनता को आंदोलन में जोड़ने का कार्य किया। ये अनाम नायिकाएँ भले ही इतिहास में कम जानी गई हो, लेकिन उनके साहस, त्याग और नेतृत्व ने बिहार में भारत छोड़ों आंदोलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लक्ष्मी देवी और अन्य महिलाओं के इस योगदान में यह स्पष्ट किया कि महिलाएँ स्वतंत्रता संग्राम में निर्णायक शक्ति हो सकती है। उनके नेतृत्व सक्रिय भागीदारी और बलिदान ने न केवल आंदोलन को मजबूती दी, बल्कि बिहार की महिलाओं की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति को भी सशक्त किया। यह साबित करता है। कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं को योगदान पुरूषों के योगदान के समा नही महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक था।[6]

2. रोहिणी देवी :–

रोहिणी देवी बिहार की उन प्रमुख महिला क्रांतिकारिणियों में से एक थी, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अपने साहस, धैर्य और नेतृत्व क्षमता के लिए विशेष पहचान बनाई। वे मुख्य रूप से जेल संघर्ष और सार्वजनिक विरोध प्रदर्शनों के लिए जानी

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

जाती है। रोहिणी देवी का योगदान इस बात का प्रमाण है कि महिलाओं की भागीदारी स्वतंत्रता संग्राम के केवल समर्थन या प्रतीकात्मक गतिविधियों तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे सशक्त नेतृत्व और निर्णायक सघर्ष का भी हिस्सा थी। आंदोलन के दौरान रोहिणी देवी ने कई बार गिरफ्तारी और जेल यातनाओं को सामना किया। जेल में रहते हुए भी उन्होंने अपने साहस और आत्मविश्वास से अन्य कैदियों को प्रेरित किया। उनका अनुशासन जैर्य और संघर्षशीलता अन्य महिलओं और युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत्र बनी। जेल में उन्होंने सत्याग्रह और अहिंसात्मक प्रतिरोध की भावना बनाए रखी, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि महिलओं का योगदान केवल प्रदर्शत तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें बलिदान, त्याग और व्यक्तिगत कठिनाइयों का सामना करना भी शामिल था। रोहिणी देवी ने जेल से बाहर आने के बाद भी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई उन्होंने स्थानीय महिलाओं को संगठित किया, उन्हें राजनीतिक जागरूकता दी और सत्याग्रह हड़तालों तथा विरोध प्रदर्शनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किय। उनका यह नेतृत्व न केवल महिलाओं को सशक्त बनाने वाला था, बल्कि उन्होंने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में आंदोलन की रणनीति और संगठन को भी मजबूत किया।[7]

सामाजिक दृष्टि से रोहिणी देवी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उनके साहस और संघर्ष ने यह संदेश दिया कि महिलाएँ भी स्ववतंत्रता संग्राम में निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं और उनके नेतृत्व से अन्य महिलाओं में भी आंदोलन में भाग लेने की प्रेरणा और आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ। इसके अलावा रोहिणी देवी ने महिलाओं के बीच सामाजिक और राजनीतिक चेतना फैलाने का कार्य किया, जिससे बिहार में आंदोलन का व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ। रोहिणी देवी का यह संघर्ष और त्याग यह दर्शाता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान पुरूषों के योगदान के समान महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक था। उनकी निडरता, साहस, नेतृत्व और बलिदान आज भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का प्रतीक हैं।

3. संतोषी देवी :–

संतोषी देवी बिहार कि उन महिला क्रांतिकारिणियों में से एक थी, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान पटना को अपने नेतृत्व और सक्रिय भागीदारी का केंन्द्र बनाया। वे आंदोलन की अग्रणी थी और और उनके साहसिक कदमों ने बिहार के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका को विशेष महत्व दिया। संतोषी देवी ने कई ब्रिटिश कार्यालयों और सरकारी भावनों का घेराव किया, जहाँ उन्होंने शांतिपूर्ण लेकिन दृढ़ प्रतिरोध के माध्यम के माध्यम से ब्रिटिश अधिकारियों को संदेश दिया कि जनता अब उनके शासन को स्वीकार नहीं करेगी। उन्होनें महिलाओं को सत्याग्रह विरोध प्रदर्शन और हड़तालों में सक्रिय रूप से शामिल किया। उनका उद्देश्य केवल विरोध करना नहीं था, बल्कि महिलाओं में राजनीतिक चेतना और नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाना भी था। संतोषी देवी ने महिलाओं को संगठित करना सिखाया। उनके नेतृत्व में महिलाएँ न केवल आंदोलन में शामिल हुई, बल्कि उन्होने स्थानीय समुदाय में भी आंदोलन की भावना को फैलाया। वे घरों, चाय–फोटों और पंचायतों में महिलाओं को जोड़ती उन्हें आंदोलन के उद्देश्य और रणनीति के बारे में सामझाती इस प्रकार उन्होंने महिलाओं का पारंपरिक सामाजिक सीमाओं के बाहर निकलकर राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। उनकी सक्रिय भागीदारी का प्रभाव केवल महिलाओं तक सीमित नहीं रहा स्थानीय जनता, विशेष रूप से युवा और ग्रामीण महिलाएँ, उनके नेतृत्व से प्रभावित हुई और आंदोलन में शामिल हुई। उनकी रणनीति और साहस में बिहार में भारत छोड़ों आंदोलन को मजबूती दी और स्थानीय विरोध प्रदर्शनों को संगठित रूप दिया। संतोषी देवी का योगदान इस दृष्टि से ऐतिहासिक महत्व रखता है कि उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम का सक्रिय हिस्सा बनाने में साथ–साथ यह भी दिखाया कि आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों के संघर्ष के समान महत्वपूर्ण और निर्णायक हो सकती हैं उनकी निडरता नेतृत्व और संगठनात्मक कौशल आज भी स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में प्रेरणास्रोत हैं।[8]

4. शांति देवी :–

शांति देवी ने पटना और आसपास के ग्रामीण इलाकों में महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी और नेतृत्व के लिए प्रेरित किया। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं को संगठित किया और उन्हें सत्याग्रह, विरोध प्रदर्शन और जन–जागरूकता अभियान में शामिल होने के लिए मार्गदर्शन दिया। शांति देवी की सक्रियता के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं में राजनीतिक चेतना, सामाजिक सक्रियता और नेतृत्व क्षमता विकसित हुई उन्होंने स्थानीय विरोध प्रदर्शन, बैठकों और सभाओं का आयोजन कर जनता को अंदोलन के महत्व और उद्देश्यों से अवगत कराया। उनके प्रयासों ने ग्रामीण इलकों में ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ विरोध को संगठित और प्रभावशाली बनाया। इसके अतिरिक्त, शांति देवी ने महिलाओं को साहस और त्याग समझाया, जिससे उन्होंने के केवल आंदोलन में भाग लिया, बल्कि स्थानीय समुदायों में अन्य महिलाओं को भी सक्रिय होने के लिए प्रेरित किया। उनका योगदान यह दर्शता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका केवल सहायक नहीं थी, बल्कि निर्णायक, नेतृत्वकारी और प्रेरणादायक थी।

बिहार की महिलाओं का योगदान केवल सार्वजनिक प्रदर्शन और विरोध तक सीमित नहीं था। उन्होंने सामाजिक जागरूकता फैलाने , स्थानीय और व्यापक संगठन बनाने, और नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत करने के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। उनके प्रयासों ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लोगों में राजनीकि चेतना बढ़ाई और महिलाओं को पारंपरिक सामाजिक सीमाओं से बाहर निकलकर सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। इन महिलाओं ने आंदोलन के दौरान न केवल सत्याग्रह, हड़ताल और विरोध प्रदर्शन में भाग लिया, बल्कि शिक्षा, जन–जागरूकता, और आंदोलन के संदेश का प्रचार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका यह योगदान यह साबित करता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी पुरूष नेताओं के समान ही निर्णायक, प्रभावशाली और प्रेरणादायक थी। इस प्रकार बिहार की महिलाओं ने अपने साहस, नेतृत्व और बलिदान के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को मजबूती प्रदान की उनका योगदान इतिहास में महिलाओं की सशक्त भूमिका और समाज में उनके अधिकारों की जागरूकता का प्रतीक बन गया। यह स्पष्ट करता है कि स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागादारी केवल सहायक या पारंपरिक भूमिका तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे समान भागीदारी, प्रेरक और नेतृत्वकर्ता थी।[9]

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

5. अन्नपूर्णा देवी – भागलपुर क्षेत्र में योगदान :–

अन्नपूर्णा देवी भागलपुर क्षेत्र की एक प्रमुख महिला क्रांतिकारिणी थी, जिन्होंने भारत छोड़ों आंदोलन में सत्याग्रह, विरोध प्रदर्शन और महिलाओं के संगठन के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने स्थानीय महिलाओं को ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित किया और उन्हें सामाजिक और राजनीतिक चेतना से लैस किया। अन्नपूर्ण देवी ने गाँव–गाँव जाकर महिलाओं को आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, उन्हें सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शन के संगठनात्मक तरीके सिखाए और आंदोलन की रणनीति में सक्रिय योगदान दिया। उनके नेतृत्व में कई गाँवों में सांकेतिक हड़तालें रैली की जन–जागरूकता अभियान आयोजित किए गए, जिससे स्थानीय जनता में आंदोलन के प्रति समर्थन और सक्रिय भागीदारी बढ़ी। उनके साहस और समर्पण के कारण कई बार उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार किया गया। जेल में रहते हुए उन्होने आंदोलन की भावना बनाए रखी और अन्य कैदियों को भी प्रेरित किया। अन्नपूर्णा देवी का योगदान इस बात का प्रामण है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का नेतृत्व, संगठन क्षमता और बलिदान आंदोलन को सफल बनाने में निर्णायक था।

6. महिला भागीदारी के स्वरूप :–

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने विभिन्न स्वरूपों में सक्रिय और निर्णायक भागीदारी निभाई। उनका योगदान केवल विरोध प्रदर्शन तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने आंदोलन को संगठित, प्रभावशाली और जन–आधारित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बिहार की महिलाओं ने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में अंदोलन के फैलाने, समाज में जागरूकता पैदा करने और राजनीतिक चेतना को मजबूत करने में योगदान दिया। उनके प्रयासों ने यह साबित किया कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान पुरूषों के योगदान के समा नही निर्णायक और प्रेरणादायक थाा। शहरी क्षेत्रों में महिलाएँ सरकारी कार्यालयों और ब्रिटिश प्रशासनिक केन्द्रों का घेराव, सांकेतिक हड़तालें और जन– जागरूकता अभियान आयोजित करती थी। पटना, गया और भागलपुर जैसे शहरों में उन्होंने आंदोलन की सुचनाओं का आदान–प्रदान किया और जनता को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ स्थानीय आंदोलनों, सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शन में सक्रिय थी। उन्होंने गाँव–गाँव जाकर जनता को जारूक किया, आंदोलन के संदेश का प्रचार किया और पुरूष क्रांतिकारियों के साथ मिलकर आंदोलन का संगठन किया। इसके अतिरिक्त, बिहार की महिलाओं ने सांस्कृतिक और सामाजिक माध्यमों का उपयोग कर आंदोलन की पहुँच और प्रभाव को बढ़ावा उन्होंने नारे, गीत, नाटक, सामाजिक सभाएँ और बैठकों के माध्यम से जनता को आंदोलन के महत्व और उद्देश्यों से अवगत कराया। इस प्रकार उन्होंने केवल विरोध प्रदर्शन नहीं किया, बल्कि समाज में राजनीतिक और सामाजिक चेतना पैदा की महिलाओं की भागीदारी में जेल संघर्ष और बलिदान का भी महत्वपूर्ण स्थान था। कई महिला क्रांतिकारिणियाँ गिरफ्तारी और जेल में बंद होने के बावजूद आंदोलन की भावना बनाए रखती थी। उनका साहस और त्याग अन्य स्वतंत्रता सेनानियों और ग्रामीण जनता के लिए प्रेरणास्रोत बना। साथ ही बिहार की महिलाओं ने नेतृत्व और रणनीति में भी निर्णायक भूमिका निभाई। उन्होंने स्थानीय समूहों को संगठित किया, विरोध प्रदर्शन और सत्याग्रह की योजनाएँ बनाई और आंदोलन के संदेश को व्यापक रूप फैलाया। उनका संगठनात्मक कौशल, साहस और रणनीतिक दृष्टि आंदोलन को संगठित, प्रभावशाली और जन–आधारित बनाने में निर्णायक साबित हुई इस बिहार की महिलाओं की भागीदारी का स्वरूप बहुआयामी, संगठित और प्रेरणादायक था। उनके योगदान ने यह स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी केवल सहायक या सीमित नहीं थी, बल्कि वे सशक्त, नेतृत्वकारी और निर्णायक भूमिका निभा सकती थी।[10]

निष्कर्ष

महिलाओं ने आंदोलन की रणनीति तैयार करने में भी सक्रिय योगदान दिया। उन्होंने सांकेतिक हड़तालों, मार्च, विरोध प्रदर्शन और सभाओं के आयोजन की योजना बनाई, जिससे आंदोलन का प्रभाव व्यापक हुआ। उनके नेतृत्व के कारण आंदोलन केवल शहरी केंद्रों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी व्यापक जन–जागरूकता और समर्थन उत्पन्न हुआ। इसके अलावा, बिहार की महिलाओं ने अन्य महिलाओं और युवाओं को भी सशक्त नेतृत्व और राजनीतिक सक्रियता के लिए प्रेरित किया। उनके साहस और संगठनात्मक कौशल ने यह प्रमाणित किया कि स्वतंत्रता संग्राम केवल पुरूषों था। महिलाओं ने नेतृत्व और रणनीति ने आंदोलन को संगठित, प्रभावशाली और जन–आधारित बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई। इस प्रकार बिहार की महिलाओं का नेतृत्व और रणनीति स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महिलाओं की राजनीतिक चेतना, साहस, संगठनात्मक क्षमता और समाज परिवर्तन की दिशा का प्रतीक बन गया। उनके कार्य यह दर्शाते है कि आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी केवल सहायक या सीमित भूमिका तक नहीं थी, बल्कि वे सशक्त निर्णयकर्ता और प्रेरक नेतृत्वकर्ता थी, जिन्होंने पूरे आंदोलन को मजबूती, दिशा और उद्देश्य प्रदान किया।

भारत छोड़ों आंदोलन में बिहार की महिलाओं का योगदान ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक रहा है। उन्होंने साहस, नेतृत्व, त्याग और बलिदान के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को मजबूती प्रदान की उनके योगदान ने आंदोलन को केवल केंन्द्रों तक सीमित रहीं रहने दिया, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी व्यापक जन–जागरूकता और सक्रिय समर्थन स्थापित किया। बिहार की महिलाओं ने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में आंदोलन के संदेश का प्रचार सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शन में भागीदारी, सांस्कृतिक माध्यमों द्वारा जन–जागरूकता फैलाना, और जेल संघर्ष एवं बलिदान जैसे क्षेत्रों में निर्णायक भूमिका निभाई। उनके साहस और संघर्ष ने यह साबित किया कि स्वतंत्रता संग्राम केवल पुरूषों का नहीं, बल्कि महिलाओं का भी समान और निर्णायक संघर्ष था। इतिहास में इन वीरांगनाओं की भूमिका केवल केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रहती उनका योगदान आज भी महिलाओं के सशक्तिकरण, समानता और समाज में राजनीतिक सक्रियता के लिए प्रेरणा का स्रोत है और यह स्पष्ट करती है। कि समाज में परिवर्तन और राष्ट्रीय विकास में महिलाओं का योगदान निर्णायक और अमूल्य होता है। इस प्रकार, बिहार की महिलाओं का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

में महिलाओं की स्थिति राजनीतिक चेतना और नेतृत्व क्षमता के मूल्य को भी उजागर करता है। उनकी प्रेरक कहानियाँ आज भी महिलाओं को सशक्त साहसी और सक्रिय नागरिक बनने के लिए मार्गदर्शन करती है।

संदर्भ सूची

1- जैन, सुनीता, :– स्वतंत्रता संग्राम में बिहार की महिलाएँ, नई दिल्ली राधा प्रकाशन, 2005 पृ. 47
2- शर्मा, अंशुल, :– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका, मुंबई प्रज्ञा पब्लिकेशन्स, 2002 पृ. 48
3- झा, रमेश, :– महिला क्रांतिकारिणियाँ और स्वतंत्रता संग्राम, दिल्ली, राष्ट्रीय प्रकाशन, 2008 पृ. 95
4- वर्मा, सुरेश, :– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष, नई दिल्ली, ऐतिहासिक शोध केंद्र, 2001 पृ. 125
5- कुमार, अजय, स्वतंत्रता आंदोलन में ग्रामीण महिलाओं का योगदान, पटना, ज्ञानदीप पब्लिकेशन्स, 2006 पृ. 28
6- नंदन, अरूण, :– स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की रानीतिक सक्रियता, मुंबई, संवाद पब्लिकेशन्स, 2003 पृ. 48
7- झा, रेखा :– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और महिला नेतृत्व दिल्ली, प्रज्ञा शोध केंद्र, 2009 पृ. 87
8- देवी, अनुराधा :– महिला क्रांति और सामाजिक जागरूकता, नई दिल्ली, भारत शोध संस्थान, 2015 पृ. 59
9- सिंह, रामप्रसाद, :– भारत छोड़ों आंदोलन में बिहार, पटन, 1989 पृ. 88
10- घोष, अंजली, :– भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिला नेताओं की भूमिका, दिल्ली, 1982, पृ. 99